उत्पादकता वृद्धि के

21 मूल मंत्र

करें	पायें
समय पर बुवाई करें	अधिकतम उत्पादन लें।
प्रमाणित/उन्नत बीज ही बोयें	20 से 25 प्रतिशत उपज बढ़ायें।
बीजोपचार (बीज का टीकाकरण) अवश्य करें।	कम खर्च में फसल रहें निरोग व स्वस्थ।
उचित बीज दर रखें। कतार में बुवाई करें। कतार से कतार की समुचित दूरी रखें।	पौधों की उचित संख्या व उचित दूरी से अच्छी बढ़वार व अधिक उपज पाएं।
जुताई–बुवाई ढलान के आडे करें।	वर्षा का ज्यादा पानी जमीन के अन्दर जाएं।
फसल बदल–बदल कर बोऐं	कीट/रोग के प्रकोप में कमी।
मिलवॉ फसल (इन्टरक्रोपिंग) लें	जोखिम कम होगा।
दलहनी/तिलहनी फसलों में जिप्सम का प्रयोग अवश्य करें	भूमि की उर्वरा शक्ति बढें। उपज की गुणवत्ता बढ़ें।
फव्वारा, ड्रिप व पाइप लाइन इस्तेमाल करें	पानी की बचत होगी व सिंचित क्षेत्र बढेगा।
फसल की क्रान्तिक अवस्थाओं पर सिंचाई अवश्य करें	कम पानी की स्थिति में अच्छी पैदावार मिलेगी।
मित्र कीटों का संरक्षण करें, प्रकाशपाश व फेरोमोनपाश काम में लेवें	दवाई का प्रयोग कम होगा। बिना दवा के कीड़ों पर नियंत्रण होगा ।
जैविक खेती अपनाऐं	रासायनिक उर्वरक से बचें।
सिफारिश के अनुसार अगेती/पछेती फसलें ले	विषम परिस्थितियों में भी आमदनी बढ़ें।
उपज को सूखाकर/छानकर/ श्रेणीवार; ग्रेडिंग कर बाजार में ले जायें	अधिक मूल्य मिले।
खाद/बीज/दवा खरीदते समय बिल अवश्य लें	धोखाधड़ी से बचेंगें। आदान की गुणवत्ता सुनिश्चित होगी।
कृषि कार्यकमों में भागीदारी बढ़ायें	नवीनतम जानकारी लें। समस्या का समाधान पायें।
फसल बीमा करवाऐं	जोखिम से बचें।
उन्नत कृषि यंत्रों का प्रयोग करें	समय, श्रम एवं पैसा बचें।
नकदी/उद्यानिकी फसलों को अपनाऐं	निरन्तर आमदनी मिले।
मिट्टी की जांच करवा कर सिफारिश के अनुसार संतुलित उर्वरक काम में लें	उर्वरक पर पैसा बचायें।
गर्मी में गहरी जुताई भारी मिट्टीयों में अवश्य करें।	खरपतवार, रोग व कीट के प्रकोप में कमी।

कृषि विभाग राजस्थान DOA

कृषि विभाग द्वारा कृषक हित में प्रसारित